

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 14, आवश्यक परिणाम, भाग 3, पिन्तेकुस्त, यीशु की मध्यस्थता, और दूसरा आगमन, मसीह के उद्धार कार्य के छह चित्र, प्रतिस्थापन, विजय, बलिदान, पुनर्स्थापना, मुक्ति, मेल-मिलाप, भाग 1

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 14, 9 उद्धार कार्य, आवश्यक परिणाम, भाग 3, पिन्तेकुस्त, यीशु की मध्यस्थता, और दूसरा आगमन, मसीह के उद्धार कार्य के छह चित्र, प्रतिस्थापन, विजय, बलिदान, पुनर्स्थापना, मुक्ति, मेल-मिलाप, भाग 1, मेल-मिलाप है।

हमारे प्रभु की मृत्यु और पुनरुत्थान उनकी अद्वितीय उद्धार घटनाएँ हैं, और उनके पास परमेश्वर के लोगों के लिए विस्मयकारी और आवश्यक परिणाम हैं।

यीशु स्वर्गारोहित हुए, वे परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे, और पिन्तेकुस्त उतना ही यीशु का कार्य है जितना कि अन्य नौ उद्धारक घटनाएँ हैं। वह क्रूस पर मरा; वह कब्र से जी उठा, और उसने और पिता ने, वास्तव में, पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा को उंडेला। पिन्तेकुस्त के दिन, प्रभु यीशु मसीह ने सार्वजनिक रूप से नई वाचा की घोषणा की, सार्वजनिक रूप से नई सृष्टि की घोषणा की, और सार्वजनिक रूप से नए समुदाय पर आत्मा को उंडेला।

यूहन्ना का सुसमाचार यूहन्ना 7:39 में एक कठिन शब्द प्रस्तुत करता है, उद्धारण, अभी तक आत्मा नहीं दी गई थी क्योंकि यीशु अभी तक महिमावान नहीं हुआ था। वास्तव में, शाब्दिक रूप से, यह कहता है, क्योंकि आत्मा अभी तक नहीं थी। बेशक, यूहन्ना का मतलब यह नहीं है कि यीशु की महिमा से पहले पवित्र आत्मा मौजूद नहीं थी।

वह वास्तव में कहता है कि आत्मा ने पहले संसार में काम किया था। बल्कि, यहाँ यूहन्ना उसी वास्तविकता की ओर इशारा करता है जिसके बारे में यीशु यूहन्ना 14:15 और 16 में बात करते हैं। पिन्तेकुस्त के दिन यीशु ने परमेश्वर के लोगों को एक नए और शक्तिशाली तरीके से पवित्र आत्मा दिया।

इसमें कम से कम चार सत्य शामिल हैं। पहला, उद्धार की पूर्णता आती है। परमेश्वर के लोग हमेशा विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए गए थे।

क्रूस से पहले, परमेश्वर ने मसीह के कार्य के आधार पर लोगों को बचाया, फिर भी भविष्य में। इसलिए, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने पहली बार उद्धार नहीं लाया। वास्तव में, उनकी

उपलब्धि इतनी महान थी कि छुटकारे के इतिहास में किसी भी समय उद्धार का आधार हो सकती है।

इसी तरह, पिन्तेकुस्त दुनिया में पवित्र आत्मा के कार्य की शुरुआत का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। इसके बजाय, यह पहले की तुलना में अधिक भव्य और पूर्ण तरीके से उद्धार के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। यह सच है क्योंकि जी उठे, उच्चारित मसीह आत्मा को अपनी आत्मा, मसीह की आत्मा के रूप में भेजते हैं।

सिंक्लेयर फर्ग्यूसन ने इस सत्य को पकड़ लिया है। मैं जिस बात को उद्धृत कर रहा हूँ, वह यह है कि मसीह के उत्थान तक, परमेश्वर की आत्मा को स्वर्गारोहित मसीह की आत्मा के रूप में उसकी विशिष्ट आर्थिक पहचान में प्राप्त नहीं किया जा सकता था। मसीह के उत्थान के माध्यम से, वह होगा।

अपने अपमान के दिनों में, मसीह की आत्मा मसीह पर थी और इसलिए, इस अर्थ में, अपने शिष्यों के साथ थी। लेकिन अपने उत्थान के समय, मसीह अपने शिष्यों पर अपनी आत्मा को फूंकेंगे। अब वह अपने शिष्यों में अपने उद्धारकर्ता की आत्मा के रूप में वास करेंगे।

पिन्तेकुस्त के दिन छुटकारे के इतिहास में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। और यह विश्वासियों के पुत्र और आत्मा के साथ रिश्ते को प्रभावित करता है। मसीह में विश्वास कभी इतना स्पष्ट नहीं था।

केवल अब, यीशु को पुनर्जीवित, सिद्ध प्रभु के रूप में माना जा सकता है। और आत्मा नवीनता और शक्ति के साथ आती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, उद्धारण, पेंटेकोस्ट से शुरू होकर खुद को परिवर्तित करते हैं, इसका अर्थ है, पूर्ण नई वाचा आशीर्वाद में आत्मा को प्राप्त करना, उनके रूपांतरण और नए जन्म का एक पहलू रहा है।

आत्मा पर एक और अच्छी किताब ग्राहम कोल की किताब है, वह जो जीवन देता है। इसमें पवित्र आत्मा का उल्लेख करने वाला एक उपशीर्षक है, लेकिन ग्राहम कोल एक शानदार ऑस्ट्रेलियाई धर्मशास्त्री हैं, जिनकी आत्मा महान है, एक उदार आत्मा है, और व्याख्या पर वास्तविक जोर है, साथ ही ऐतिहासिक और व्यवस्थित धर्मशास्त्र का ज्ञान भी है। पेंटेकोस्ट पर यीशु द्वारा आत्मा के दान में गवाही के लिए नई शक्ति दी गई है।

वेन ग्रुडेम ने संक्षेप में बताया कि शिष्यों को, हालांकि, पिन्तेकुस्त के दिन तक सेवकाई के लिए यह पूर्ण नई वाचा शक्ति प्राप्त नहीं होती है। इस नई वाचा शक्ति ने शिष्यों को उनकी गवाही और उनकी सेवकाई में अधिक प्रभावकारिता प्रदान की। प्रेरितों के काम 1:8, इफिसियों 4:8, और इफिसियों 4:11-13। सभी विश्वासियों के जीवन में पाप के प्रभाव पर विजय के लिए बहुत अधिक शक्ति।

रोमियों 6, रोमियों 8, गलातियों 2:20, फिलिप्पियों 3:10. और शैतान और शैतानी ताकतों पर विजय पाने की शक्ति जो विश्वासियों पर हमला करती हैं। 2 कुरिन्थियों 10:3-4, इफिसियों 1:19-21, 1 यूहन्ना 4:4. मैं पाठों के साथ रुकता हूँ। नया समुदाय तब बना जब यीशु ने पिन्तेकुस्त के दिन सार्वजनिक रूप से आत्मा प्रदान की।

पिन्तेकुस्त के दिन जब मसीह ने आत्मा दी, तब उन्होंने एक नया समुदाय, नया नियम चर्च बनाया। परमेश्वर के लोगों के नए समुदाय के बारे में बात करने का एक और महत्वपूर्ण तरीका मंदिर की कल्पना है। पिन्तेकुस्त के दिन, चर्च परमेश्वर का मंदिर बन जाता है।

आदरणीय सुधारवादी धर्मशास्त्री हरमन बाविक ने इस मामले के बारे में लिखा। लेकिन यह केवल पिन्तेकुस्त के दिन ही था जब उन्होंने चर्च को अपना मंदिर बनाया। एक ऐसा मंदिर जिसे वह हमेशा पवित्र करते हैं, बनाते हैं, और फिर कभी नहीं छोड़ते।

पवित्र आत्मा का वास मसीह के चर्च को एक स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान करता है। अब यह लोगों के रूप में इज़राइल के अस्तित्व के घेरे में और फिलिस्तीन की सीमाओं के भीतर सीमित नहीं है, बल्कि इसके भीतर रहने वाले आत्मा द्वारा स्वतंत्र रूप से रहता है, पूरी धरती पर फैलता है, और सभी लोगों तक पहुँचता है। ईश्वर, अपनी आत्मा के द्वारा, अब सियोन के मंदिर से मसीह के चर्च के शरीर में निवास करने के लिए आगे बढ़ता है, जो परिणामस्वरूप इस दिन, पेंटेकोस्ट, एक मिशन और विश्व चर्च के रूप में पैदा होता है।

हरमन बाविक का महान धर्मशास्त्र, *रिफॉर्म थियोलॉजी*, कई सालों तक डच में था, लेकिन पिछले 10 या 15 सालों में ही इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। यह शानदार है। यह शानदार है।

उनका लालन-पालन एक बहुत ही रूढ़िवादी डच चर्च में हुआ था, और उन्होंने जो किया उसे करना अस्वीकार्य था। वे चर्च सेमिनरी से दूर चले गए, जो बहुत सुरक्षित और रूढ़िवादी था, महान डच विश्व सेमिनरी में चले गए, जो बहुत ही उदार और वास्तव में उदार था। उन्होंने हॉलैंड में अपने समय के प्रमुख उदारवादियों के अधीन अध्ययन किया और बिना किसी नुकसान के बाहर निकले, अपने विश्वास में दृढ़ लेकिन वर्तमान धर्मशास्त्रों के बारे में पूरी तरह से जानकार।

इस प्रकार, वह सच बोलने में सक्षम है; ओह, वह 19वीं सदी के अंत या 20वीं सदी की शुरुआत के उदारवाद में बेजोड़ है। यह अद्भुत है - उसका सुधारवादी हठधर्मिता।

तीन बड़ी मात्राएँ, एक छोटी मात्रा, आकार में छोटी। यीशु के मुख्य उद्धारक कार्य उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान थे। वे इतने प्रभावशाली थे कि अन्य उद्धारक कार्यों में विस्मयकारी और स्थायी प्रभाव उत्पन्न करते थे।

उन कार्यों में से एक था पिन्तेकुस्त, जब मसीह ने अपने चर्च को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया। पिन्तेकुस्त यीशु का अद्वितीय मुक्तिदायी ऐतिहासिक कार्य था। वहाँ, मध्यस्थ के रूप में, उन्होंने सार्वजनिक रूप से नई वाचा की घोषणा की।

उन्होंने पहले इसकी पुष्टि की थी, लेकिन अब वे इसे जाहिर कर रहे हैं। पुनर्जीवित प्रभु के रूप में, उन्होंने सार्वजनिक रूप से नई सृष्टि की शुरुआत की। मसीह के रूप में, उन्होंने सार्वजनिक रूप से अपने चर्च को आत्मा दी, जिससे यह एक नए समुदाय के रूप में गठित हुआ।

थोड़ा कार्बोरेटर की समस्या, क्षमा करें। हमारी अगली बचाव घटना यीशु की मध्यस्थता है। मसीह का बचाव कार्य उसके स्वर्गारोहण सत्र और पित्तुकुस्त के साथ समाप्त नहीं होता है।

स्वर्गारोहण, सांसारिक सेवकाई से स्वर्गीय सेवकाई की ओर उसका संक्रमण है। जब मसीह स्वर्ग में चढ़ता है और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठता है, तो वह मध्यस्थता की अपनी स्वर्गीय सेवकाई शुरू करता है। मध्यस्थता की यह स्वर्गीय सेवकाई हमें वास्तव में कैसे बचाती है? सबसे पहले, यह हमें बचाती है क्योंकि यह मसीह के पुरोहिती कार्य की पूर्णता है।

मसीह की मध्यस्थता निश्चित रूप से उनके बलिदानी कार्य की पूर्णता नहीं है। उनका बलिदानी कार्य हमेशा के लिए क्रूस पर समाप्त हो गया। वास्तव में, यूहन्ना 19 के अनुसार, उन्होंने स्वयं कहा कि यह समाप्त हो गया है।

हालाँकि, उनका बलिदानपूर्ण कार्य उनके पुरोहिती कार्य का अंत नहीं था। पापों के लिए अंतिम बलिदान देने के बाद, वह फिर से जी उठे, स्वर्ग में चढ़ गए, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गए, और कलीसिया पर आत्मा उंडेल दी। इन पूर्व उद्धारक घटनाओं के परिणामस्वरूप, वह अब उन पापियों के लिए मध्यस्थता करते हैं जिन्हें बचाने के लिए वे आए थे।

अभी भी, स्वर्ग में मसीह अपने लोगों के लिए निरंतर और प्रभावी मध्यस्थता कर रहा है, इस प्रकार हमारे अंतिम उद्धार की गारंटी देता है। यह दूसरे तरीके की ओर ले जाता है जिससे उसकी मध्यस्थता हमें बचाती है। यह हमें बचाता है क्योंकि यह एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को विश्वास और आज्ञाकारिता में बने रहने में सक्षम बनाता है।

यह परमेश्वर की योजना है कि उसके चुने हुए लोग विश्वास और आज्ञाकारिता में दृढ़ रहें, रोमियों 8:29 और 30। एक तरीका जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी योजना को पूरा करता है वह है रोमियों 8:34 में उसके पुत्र का मध्यस्थता कार्य। मसीह की मध्यस्थता में पिता और आत्मा दोनों शामिल हैं।

यह पुरोहिताई है, यह निरंतर है, यह प्रभावी है, और यह विशिष्ट है। यह सुझाव देना अजीब लग सकता है कि मसीह को विश्वासियों के अंतिम उद्धार को सुनिश्चित करने के लिए क्रूस पर मरने से ज़्यादा कुछ करने की ज़रूरत थी। हालाँकि, पाप की बहुआयामी समस्या के लिए बहुआयामी समाधान की आवश्यकता है।

मसीह की उद्धारक घटनाओं को पूर्ण उद्धार प्रदान करने के लिए मानवीय पाप की पूरी रूपरेखा को संबोधित करना चाहिए। यदि मसीह का पाप रहित जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, सत्र, और आत्मा का भेजा जाना विश्वासी के औचित्य के लिए आवश्यक है, तो अंतिम उद्धार तक विश्वासी के दृढ़ रहने के लिए क्या आवश्यक है? बाइबल का उत्तर ये सभी घटनाएँ हैं, साथ ही उनकी मध्यस्थता और वापसी। रोमियों 8:34 में उनकी मध्यस्थता हमारी ओर से उनकी प्रार्थना है।

जैसा कि मैंने पहले इब्रानियों 7:25 में इन व्याख्यानों में कहा था, उनकी मध्यस्थता उनके द्वारा स्वर्ग में पिता के समक्ष अपने व्यक्तित्व में किए गए बलिदान की प्रस्तुति है। इब्रानियों 7 कहता है कि वह अविनाशी जीवन की शक्ति से जीवित है, और इसलिए क्योंकि वह हमेशा के लिए जीवित

रहता है, अब स्वर्गारोहित होकर बैठा है और मध्यस्थता कर रहा है क्योंकि वह हमेशा के लिए जीवित व्यक्ति के रूप में रहता है, वह अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करने के लिए हमेशा जीवित रहता है, जिससे हमें अनंत उद्धार का आश्वासन मिलता है। मसीह हमारे प्रभु, अपने पुरोहिती मंत्रालय में, न केवल क्रूस पर मरे, बल्कि वे प्रार्थना में और स्वर्ग में पिता की उपस्थिति में अपने बलिदान को निरंतर प्रस्तुत करके हमारे लिए मध्यस्थता भी करते हैं।

हमारा उद्धारकर्ता परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है, जो हमेशा के लिए हमारे उद्धार को बनाए रखता है। मसीह का दूसरा आगमन उसके उद्धार कार्य की परिणति है। पाप रहित जीवन के अवतार की दो आवश्यक पूर्व शर्तें।

मुख्य घटनाएँ केवल उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान हैं, जिन्हें हमें अविभाज्य मानना चाहिए, लेकिन फिर उन दो मुख्य घटनाओं के पाँच आवश्यक परिणाम घटित होते हैं और हो रहे हैं, और उनमें से एक अभी भी घटित होगा। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान इतना विस्मयकारी, अद्भुत और प्रभावशाली है कि उनके परिणामस्वरूप उनका स्वर्गारोहण हुआ, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे, आत्मा को उंडेला, उनके स्वर्गीय मंत्रालय में हमारे लिए प्रार्थना की (रोमियों 8:34) और पिता के सामने अपने बलिदान को हमेशा के लिए प्रस्तुत किया (इब्रानियों 7:24 और 25) और उनका उद्धार कार्य पूरी तरह से और अंततः उनके दूसरे आगमन में समाप्त हो जाएगा। मेरी पसंदीदा पुस्तक अभी भी लास्ट थिंग्स पर है, और मैं पक्षपाती हूँ। मैं मानता हूँ कि यह एंथनी होकेमा की पुस्तक *द बाइबल एंड द प्यूचर* है।

उम्मीद को उद्धृत करें होकेमा के हवाले से, मसीह के दूसरे आगमन की उम्मीद नए नियम के युगांतशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, इतना अधिक कि नए नियम के चर्च का विश्वास इस उम्मीद से प्रभावित है। नए नियम की हर किताब हमें मसीह की वापसी की ओर इशारा करती है और हमें इस तरह जीने के लिए प्रेरित करती है कि हम हमेशा उस वापसी के लिए तैयार रहें। मसीह की वापसी की यही जीवंत उम्मीद आज मसीह के चर्च की पहचान होनी चाहिए। उन्होंने 50 साल पहले लिखा था लेकिन यह हमारे समय में भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

टोनी होकेमा *बाइबल और भविष्य*। तब एक भावना यह है कि जब मसीह वापस आता है तो दूसरा आगमन बचाता है, और वह अपने उद्धार कार्य का अंतिम अनुप्रयोग लाता है। वह कार्य उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में पूरा हुआ, लेकिन इन घटनाओं के बाद, दूसरा आगमन परमेश्वर के उद्धार उद्देश्यों के अंतिम कार्यान्वयन को सक्रिय करता है।

पहले से ही, हमारे पास उद्धार है, लेकिन चीजें अभी वैसी नहीं हैं जैसी वे उसके लौटने पर होंगी। पवित्रशास्त्र कम से कम सात विशेष तरीके बताता है जिनसे यीशु का दूसरा आगमन बचाता है। उसकी वापसी का मतलब है हमारा उसके और पिता के साथ होना।

यूहन्ना 14 में उसने कहा, " मेरे पिता के घर में बहुत से कमरे हैं। अगर ऐसा न होता, तो क्या मैं तुमसे कहता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हूँ? और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो मैं फिर आऊँगा।" मुझे ये शब्द बहुत पसंद हैं।

और तुम्हें अपने पास ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ, वहाँ तुम भी रहो। यहाँ, यीशु स्वर्ग की तुलना कई कमरों वाले एक बड़े घर से करते हैं। और मैं यहाँ अपने गृह राज्य सेंट लुइस में ऐसे लोगों को जानता हूँ जिनके प्यारे दोस्त दूर चले गए और उनके बच्चे बड़े होकर चले गए।

इसलिए, सेंट लुइस में रहने वाले लोगों ने अपने प्यारे दोस्तों से कहा, " अगर तुम कभी हमारे गृहनगर वापस आओगे और हमसे मिलने नहीं आओगे, तो हम तुम पर गुस्सा करेंगे," उन्होंने मजाक में कहा। वास्तव में, आप देख सकते हैं कि आपका नाम अब इस पूर्व बच्चे के बेडरूम पर है। वे क्या कर रहे थे? वे गंभीरता से यह दिखाने के लिए मजाकिया थे कि जब वे फिर से आएंगे तो उनके दोस्तों का कितना स्वागत होगा।

इसी तरह, यीशु हमारे लिए एक कमरा तैयार करने के लिए पिता के स्वर्गीय घर में गया है। दूसरे शब्दों में, यह इस तथ्य के लिए प्रतीकात्मक भाषा है कि पिता हमें जानता है, पिता हमसे प्यार करता है, वह हमारा स्वागत करता है, और हम उसके हैं। सभी के पिता, परमेश्वर के होने का क्या ही अद्भुत अनुभव है।

पॉल भी यही सच्चाई सिखाता है। और इसलिए, यीशु वापस आने और हमें अपने और पिता के साथ ले जाने का वादा करता है। और, बेशक, पवित्र आत्मा के साथ।

पौलुस ने भी यही सत्य सिखाया जब उसने यीशु की वापसी के बारे में थिस्सलुनीकियों के भ्रम को दूर किया। पौलुस ने यीशु की वापसी और उसके आशीर्वाद के बारे में प्रचार किया था। और थिस्सलुनीकियों में इतनी उत्सुकता थी कि वे यीशु के आने का इंतज़ार कर रहे थे।

और फिर उनमें से कुछ लोग मरने लगे। और उन्होंने कहा, यहाँ क्या हो रहा है? उन्हें इसकी उम्मीद नहीं थी। और उन्होंने सोचा, क्या हमारे मृत विश्वासी मसीह की वापसी से चूक जाएँगे? यीशु ने कहा, नहीं, बिलकुल नहीं।

वह समझाता है। वे चूकेंगे नहीं। लेकिन जब यीशु वापस आएगा, तो उन्हें मृतकों में से जीवित कर देगा।

फिर हम जो जीवित हैं, जो बचे हुए हैं और मरते नहीं हैं, जो यीशु के वापस आने पर बचे हुए हैं, हम उनके साथ बादलों में हवा में प्रभु से मिलने के लिए उठाए जाएँगे। और इसलिए, हम हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे। याद रखें, यीशु ने कहा, मैं आऊँगा और तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा।

मैं यहीं हूँ; आप भी हो सकते हैं। स्वर्ग, अपने मध्यवर्ती और अंतिम दोनों चरणों में, प्रभु के साथ होना है। यहाँ उद्धार को हमेशा के लिए यीशु के साथ होने के रूप में व्यक्त किया गया है।

हमारा शाश्वत गंतव्य स्वर्ग में शरीर के बिना एक आध्यात्मिक अमूर्त अस्तित्व नहीं होगा, बल्कि त्रिदेवों और नई पृथ्वी पर सभी संतों के साथ एक पुनर्जीवित, समग्र अस्तित्व होगा। यीशु की वापसी उसे महिमा दिलाती है। स्वर्ग में हमारी नागरिकता, पॉल ने फिलिप्पियों 3 में कहा, हमारी नागरिकता स्वर्ग में है।

वहाँ से हम एक उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह की प्रतीक्षा करते हैं, जो हमारे दीन शरीर को अपनी महिमामय देह के समान रूपांतरित कर देगा, उस शक्ति से जो उसे सभी चीज़ों को अपने अधीन करने में सक्षम बनाती है। और कुलुस्सियों 3:4, जब मसीह, जो तुम्हारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट होगे। हमारी सच्ची पहचान मसीह के साथ इतनी जुड़ी हुई है कि वह आयत सिखाती है कि एक भावना है कि हम दूसरी बार आने वाले हैं।

जब वह महिमा में प्रकट होता है, तो हम भी महिमा में प्रकट होंगे। उस संदर्भ में वहाँ प्रकट होना एक दूसरा आगमन शब्द है। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि हम मसीह के साथ एकता में उसके साथ इतने जुड़े हुए हैं कि हालाँकि अब हम उनमें से कुछ फलों का आनंद लेते हैं, हमारी असली पहचान तब तक प्रकट नहीं होगी जब तक कि वह फिर से न आए और यह प्रकट न करे कि हम वास्तव में उसके अंदर कौन हैं।

इसका मतलब है कि सारे पाप दूर हो जाएँगे, और फिर से, हमारे शरीर उसके शरीर के समान हो जाएँगे। यह सब उसे वह महिमा दिलाता है जिसके वह हकदार हैं। यीशु की वापसी का मतलब है अनंत जीवन लाना।

भेड़ और बकरियों के अंश में, यीशु तीन बार भेड़ और बकरियों के क्रम का उपयोग करते हैं। तीन बार वे ये शब्द कहते हैं। और फिर अंत में पंच लाइन में, वे शब्दों, क्रम को उलट देते हैं, और कहते हैं बकरियाँ और भेड़, जिससे इन अंतिम शब्दों पर जोर पड़ता है।

मत्ती 25:31. जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और उसके साथ सभी स्वर्गदूत होंगे, तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा। वह सभी राष्ट्रों को इकट्ठा करेगा, और वह लोगों को एक दूसरे से अलग करेगा जैसे एक चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है।

यह एक बार होगा। वह भेड़ों को अपने दाहिने हाथ पर और बकरियों को अपने बाएं हाथ पर दो बार रखेगा। और फिर यह आगे बढ़ जाएगा।

फिर राजा अपने दाहिनी ओर बैठे लोगों से कहेगा, वे भेड़ें होंगी, और वह आगे कहता है, आओ और तुम्हारे लिए तैयार किए गए राज्य को ग्रहण करो क्योंकि तुमने मेरी सेवा की जब तुमने इनमें से सबसे छोटे की सेवा की। यह कहना है। और फिर वह बकरियों से कहता है, मेरे पास से चले जाओ। तुम शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार की गई अनन्त आग में शापित हो क्योंकि उन्होंने ज़रूरत में उसके लोगों से घ्यार करके सच्चा विश्वास नहीं दिखाया।

तो, यह भेड़, बकरी, भेड़, बकरी, भेड़, बकरी, और फिर 46 है। मुझे इसे इस तरह कहना चाहिए। यह भेड़, बकरी, भेड़, बकरी, और फिर भेड़, बकरी, विस्तारित शब्दों में, और फिर 46 है।

ये, स्पष्ट रूप से बकरियाँ, अनन्त दण्ड में चली जाएँगी, लेकिन धर्मी लोग अनन्त जीवन में चले जाएँगे जहाँ दोनों नियतियाँ एक ही विशेषण, एनिओस, या अनन्त द्वारा संशोधित की जाती हैं। हाँ, इसका अर्थ है युग लंबा, जिसमें संदर्भ द्वारा परिभाषित युग, और आने वाला युग स्वयं परमेश्वर के जीवन द्वारा परिभाषित किया गया है।

नर्क कभी खत्म नहीं होता, न ही स्वर्ग, स्वर्ग का आनंद। यीशु वापस आ गया, यानी अनंत जीवन लेकर आया। बकरियों और भेड़ों के क्रम को उलटना जोरदार है।

यह हमारा ध्यान आकर्षित करता है। इसलिए, यीशु की शिक्षा में सबसे अंतिम शब्द है अनन्त जीवन। यही वह लाता है।

बाइबल का सबसे आखिरी अध्याय कहता है, धन्य हैं वे जो अपने वस्त्र धोते हैं। इसका अर्थ है रक्त में, मेमे की बलिदानपूर्ण मृत्यु। धन्य हैं वे जो मसीह में विश्वास करते हैं, जो हमारा बलिदान है, ताकि उन्हें जीवन के वृक्ष का अधिकार मिले, प्रकाशितवाक्य 22:14।

ईश्वर के साथ अनंत जीवन का प्रतीक वृक्ष ईडन गार्डन में पाया गया था और बाइबिल की कहानी के अंत में फिर से प्रकट हुआ। जब यीशु फिर से आता है, तो वह अनंत जीवन लाता है। वह आनंद लाता है।

वही श्लोक, धन्य हैं वे जो अपने वस्त्र धोते हैं, ताकि उन्हें जीवन के वृक्ष का अधिकार मिल सके। वे सचमुच खुश हैं, और यह परमेश्वर का बहुत भला है कि वह हमें समय से पहले ही ऐसी बातें बता देता है, क्योंकि हमारे पास प्रत्याशा का आनंद है, लेकिन प्रत्याशा का आनंद वास्तविक प्राप्ति और प्रभु की उपस्थिति में होने के आनंद की तुलना में कुछ भी नहीं है। उसकी वापसी आनंद लाती है।

इसीलिए पौलुस ने परमेश्वर के लोगों से आग्रह किया, एक पादरी के रूप में तीतुस को लिखते हुए और परमेश्वर के सभी बच्चों पर लागू करते हुए, कि वे हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह की महिमा के प्रकटन की प्रतीक्षा करें, जिसने हमारे लिए खुद को दे दिया। वह इसे हमारी धन्य आशा कहता है। यह आशा मसीह में हर भाई और बहन के दिल में खुशी पैदा करती है।

प्रभु और उद्धारकर्ता के फिर से आने की आशा ईसाइयों को खुशी से भर देती है क्योंकि वे हमेशा के लिए उनके साथ रहने की आशा करते हैं। यीशु की वापसी मुक्ति लाती है। 2 थिस्सलुनीकियों 1:6 और उसके बाद के अनुसार, वह अपने लोगों को उत्पीड़न से मुक्ति दिलाएगा।

परमेश्वर यह उचित समझता है कि जो लोग तुम्हें क्लेश देते हैं, उनके प्रतिफल को वह चुकाए, और जो क्लेश पाते हैं, उन्हें भी राहत दे, जब यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों और धधकती हुई आग के साथ स्वर्ग से प्रकट होगा। 2 थिस्सलुनीकियों 1:6 से 8. दूसरा, मसीह अपने लोगों को अनन्त दण्ड से छुड़ाएगा। 1 थिस्सलुनीकियों 1:10.

थिस्सलुनीकियों के आस-पास के लोग, उनके आस-पास के नगर, रिपोर्ट करते हैं कि तुम कैसे मूर्तियों से परमेश्वर की ओर फिरते हो ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। और स्वर्ग से उसके पुत्र यीशु के आने की प्रतीक्षा करो, जिसे उसने मरे हुआं में से जिलाया, जो हमें आनेवाले क्रोध से बचाता है। 1 थिस्सलुनीकियों 1:9 और 10.



यीशु की वापसी राज्य और हमारी विरासत को वापस लाती है, मत्ती 25 में भेड़ और बकरियों के बारे में बताया गया है। भेड़ों से वह कहता है, आओ, तुम जो मेरे पिता के धन्य हो।

उस राज्य के वारिस बनो जो जगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है। मत्ती 25:31. मत्ती 25:34, क्षमा करें।

यहाँ, यीशु ने पारिवारिक और शाही छवि को एक साथ पेश किया है। तुम मेरे पिता द्वारा धन्य हो। राज्य के वारिस बनो।

यह रूपकों को खूबसूरती से मिलाने का परमेश्वर का तरीका है। परमेश्वर हमारा पिता है, और जो लोग उद्धार के लिए उसके पुत्र पर भरोसा करते हैं, वे परमेश्वर की संतान बन जाते हैं और विरासत प्राप्त करते हैं। परमेश्वर राजा भी है, जैसा कि उसका पुत्र है।

और परमेश्वर के पुत्रों और पुत्रियों की विरासत वह राज्य है जिसे परमेश्वर ने संसार की नींव से ही उनके लिए तैयार किया है। यदि हम सभी धर्मग्रंथों को एक साथ रखें, तो हमारी विरासत पवित्र त्रिमूर्ति और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से कम कुछ नहीं है। दूसरे शब्दों में, सब कुछ।

यीशु की वापसी, जैसा कि हमने अब तक कई बार देखा है, ब्रह्मांडीय बहाली लेकर आती है। पतरस यीशु की पीड़ा के बारे में बात करता है और यरूशलेम में उसके श्रोताओं से पश्चाताप करने का आह्वान करता है। परिणाम? कि पश्चाताप करने वाले श्रोता व्यक्तिगत रूप से पापों की क्षमा को जान सकें, और यह कि, उद्धारण, प्रभु की उपस्थिति से ताज़गी के समय आ सकते हैं, और वह आपके लिए नियुक्त मसीह, यीशु को भेज सकता है, जिसे स्वर्ग को सभी चीजों को बहाल करने के समय तक प्राप्त करना होगा।

प्रेरितों के काम 1:20 और 21. यीशु की वापसी उसके लोगों के लिए बहुत सी आशीषें लेकर आएगी। पुराने नियम की भविष्यवाणी के अनुसार, इसका परिणाम यह भी होगा कि परमेश्वर सभी चीजों को बहाल करेगा।

यहाँ भी, यशायाह 65:17, 66:22, और 23 में बताए गए नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में दूसरा आगमन जारी है। हमने वास्तव में यीशु की नौ उद्धारक घटनाओं को कवर किया है। जैसा कि मैंने पहले कहा, घटनाएँ स्व-व्याख्या नहीं हैं, यहाँ तक कि परमेश्वर की घटनाएँ भी नहीं।

दुर्भाग्य से, इस्राएल के कुछ नेता क्रूस के नीचे खड़े होकर, विडंबना यह है कि, अपने स्वयं के धर्मग्रंथों, उदाहरण के लिए, भजन 22 की पूर्ति में, अपने मसीह का मज़ाक उड़ाया। हम्म।

क्रूस पर चढ़ाओ, क्रूस पर चढ़ाओ। उसका खून हम पर और हमारे बच्चों पर हो। ओह, ये शब्द मुझे डरा रहे हैं।

हमारे समय में जब तक यीशु फिर से नहीं आते, तब तक परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों पर दया करे। निश्चित रूप से, इसमें शामिल सभी सैनिकों ने पश्चाताप नहीं किया और यीशु पर विश्वास नहीं किया।

एक सूबेदार ने ऐसा ही किया। उसने कहा कि यह आदमी निश्चित रूप से परमेश्वर का पुत्र है। आश्चर्यजनक रूप से, यीशु के दाहिने और बाएं हाथ पर क्रूस पर चढ़ाए गए दो चोरों में से एक ने विश्वास किया।

प्रभु, जब आप अपने राज्य में आएंगे तो मुझे याद रखना। और यीशु कहते हैं, आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे। लेकिन बहुत से लोग, जो उस घटना को देख रहे थे और जो वास्तव में वहाँ थे, उनमें से अधिकांश समझ नहीं पाए।

शिष्य भी भाग गए। उन्हें समझ नहीं आया। इसका मतलब है कि हम जीत रहे हैं।

नहीं, वे भाग गए। पतरस ने अपने प्रभु को अस्वीकार कर दिया। बाकी लोग भाग गए, सिवाय शायद यूहन्ना के।

तो, ईश्वर अभिनय करने वाला ईश्वर है। वह बोलने वाला ईश्वर भी है। वह कर्म और वचन रहस्योद्घाटन को मिलाकर कर्म हाइफ़न शब्द रहस्योद्घाटन देता है।

वह कार्य करता है, और वह अपने कार्यों की व्याख्या करता है। वह हमारे लिए, अपने लोगों के लिए कितना दयालु है। और बाइबल एक कहानी की किताब है।

कहानी सृजन, विद्रोह, मुक्ति या छुटकारे के बारे में है। इस्राएल और चर्च वहाँ उपसमूह हैं। और फिर मृतकों के नए पुनरुत्थान और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परिणति।

लेकिन यह एक चित्र पुस्तक भी है। यह एक कहानी की किताब है जो घटनाओं को बताती है, घटनाओं को बताती है। हमने यीशु की नौ घटनाओं का अध्ययन किया है।

इनमें से सबसे महत्वपूर्ण हैं उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान। लेकिन परमेश्वर उन घटनाओं की व्याख्या करने के लिए चित्र भी बनाता है। बाइबल एक कहानी की किताब है।

घटनाएँ हैं, नौ विस्मयकारी घटनाएँ। मसीह के दूसरे आगमन से लेकर देहधारण तक सब कुछ। लेकिन परमेश्वर इन बातों की व्याख्या हम पर नहीं छोड़ता कि हम खुद करें।

वास्तव में, नए नियम का मुख्य उद्देश्य मसीह की इन उद्धारकारी घटनाओं की व्याख्या करना और उन्हें परमेश्वर के लोगों पर लागू करना है। परमेश्वर इसे कई चित्रों के माध्यम से करता है। और मैं प्रभु यीशु मसीह के कार्य की व्याख्या करने के लिए छह प्रमुख चित्रों की गिनती करता हूँ।

और हम इन तस्वीरों के ज़रिए अपना काम करना चाहते हैं। एक-एक करके। ताकि हम बेहतर ढंग से समझ सकें कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया।

सभी तस्वीरें एक ही बात कहती हैं। हम गंभीर संकट में थे। और परमेश्वर ने अपने बेटे में हमसे प्रेम किया।

और यीशु हमें हमारे पापों से बचाता है। और फिर भी परमेश्वर ऐसा इस तरह से करता है कि यह सुंदर है। और हम मसीह की उद्धारक उपलब्धि की छह प्रमुख तस्वीरें देखते हैं।

इसमें प्रतिस्थापन की एक तस्वीर है। जिसमें यीशु अपने लोगों के लिए दंड का भुगतान करता है। जीत की एक तस्वीर।

मसीह, हमारा विजेता, हमारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और हमें अभी विजय की ओर ले जाता है तथा अपनी वापसी पर पूर्ण विजय प्रदान करता है। यहाँ पंथ से एक चित्र है, जो पुराने नियम के इस्राएल की आराधना है, जो तम्बू और मंदिर में होती है। पुरोहित बलिदान का एक चित्र है।

जहाँ हमारा प्रभु पुजारी और बलिदान दोनों है। हमें शुद्ध करने के लिए एक बार और हमेशा के लिए खुद को अर्पित कर देता है। मैं इसे दूसरा आदम नई सृष्टि चित्र कहता हूँ।

जिसमें यीशु ने आदम में जो खोया था उसे पुनःस्थापित किया। वह मृत्यु लेकर आया। मसीह अपनी आज्ञाकारिता के माध्यम से जीवन लाता है।

यहाँ छुटकारे की एक तस्वीर है। जिसमें यीशु अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा बंदियों को मुक्त करता है। हम भी इसी से शुरुआत करेंगे।

यहाँ मेल-मिलाप की एक तस्वीर है। जिसमें हमारा प्रभु उन लोगों के बीच शांति स्थापित करता है जो अलग-थलग हैं और ईश्वर के बीच। और मैं यह तर्क देने जा रहा हूँ कि यह ईश्वर और अलग-थलग लोगों के बीच शांति स्थापित करने की उनकी एक प्रतिवर्ती क्रिया है।

चार मुख्य पौलीन ग्रंथ हैं। मेलमिलाप पौलीन की शिक्षा है। वे रोमियों 5:1-11 में पाए जाते हैं।

2 कुरिन्थियों 5:16-21. इफिसियों 2:11-19. और कुलुस्सियों 1:19-23.

हम इनमें से प्रत्येक चित्र को बारी-बारी से देखेंगे। और उस क्षेत्र को देखकर शुरू करेंगे जहाँ से रूपक, मूल भाव, छवि और चित्र खींचे गए हैं। मेल-मिलाप व्यक्तिगत संबंधों के क्षेत्र से खींची गई मसीह के उद्धार कार्य की एक तस्वीर है।

लोग एक दूसरे को जानते हैं, एक दूसरे से प्यार करते हैं, एक दूसरे से नफरत करते हैं। इसका संबंध दुश्मनी और दोस्ती से है। दुश्मनों और दोस्तों से।

संक्षेप में, हम अपने पापों के कारण परमेश्वर के शत्रु थे। और उसने अपने बेटे के माध्यम से शांति स्थापित की ताकि उसके शत्रु उसके मित्र बन जाएँ। अन्य चित्रों के विपरीत, यह चित्र पुराने नियम की पृष्ठभूमि वाला नहीं लगता।

यह तर्क दिया जा सकता है कि इसकी पृष्ठभूमि यहूदी शहीद परंपरा है, जैसा कि 2 मैकाबीज़ में व्यक्त किया गया है। और यह सच भी हो सकता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अन्य पाँच चित्रों के विपरीत, जो पुराने नियम पर आधारित हैं, यह ऐसा नहीं लगता है।

परिभाषा। पौलुस इसे शांति स्थापित करने या शांति स्थापित करने के रूप में परिभाषित करता है। कुलुस्सियों 1:19-20।

क्योंकि उसमें, अर्थात् मसीह में, परमेश्वर की सारी परिपूर्णता वास करने को प्रसन्न हुई। और क्रूस पर बहाए गए लहू के द्वारा शांति स्थापित करके, उसके द्वारा सब वस्तुओं का अपने साथ मेल कर लेना, चाहे वे पृथ्वी की हों या स्वर्ग की। मेल मिलाप का अर्थ है शांति स्थापित करना।

चूँकि मेल-मिलाप व्यक्तिगत संबंधों के दायरे से संबंधित एक तस्वीर है, मेल-मिलाप की आवश्यकता टूटे हुए संबंधों, खंडित संबंधों, यदि आप चाहें तो है। रोमियों 5:10. हम परमेश्वर के शत्रु थे, पॉल लिखते हैं।

कुलुस्सियों 1:21. हम अपने मन में परमेश्वर से विमुख और शत्रुतापूर्ण थे। मेल-मिलाप के आरंभकर्ता और लक्ष्य पर हम आगे विचार करेंगे।

पॉल में, ईश्वर, जो अपमानित पक्ष है, पहल करता है। कभी-कभी पादरी के रूप में, मैं कभी भी केवल पादरी नहीं रहा। मैं हमेशा एक प्रोफेसर रहा हूँ, अब सेवानिवृत्त हो चुका हूँ, जिसने विभिन्न राज्यों में विभिन्न चर्चों में लगभग 10 बार या उससे अधिक समय तक अंतरिम पादरी के रूप में काम किया है और इसका भरपूर आनंद लिया है। कभी-कभी मुझे विवाह परामर्श देने के लिए बुलाया जाता था, और कभी-कभी यह पहाड़ में मोहम्मद की तरह होता था।

पति-पत्नी के बीच एक वास्तविक समस्या है, और कोई भी पक्ष आगे नहीं बढ़ेगा। मेरी समझ से पुरुष प्रधानता का मतलब है कि पति पहला कदम उठाते हैं। हम रिश्ते में नेता के रूप में खुद को विनम्र बनाने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं।

हाँ, दोनों तरफ़ पाप है और कभी-कभी तो सच में बहुत कुछ बन जाता है। लेकिन हमें यीशु की तरह सेवक नेता बनने के लिए बुलाया गया है। और किसी भी मामले में, इस संबंध में, हम परमेश्वर के साथ शांति बनाने की पहल नहीं कर सकते।

परमेश्वर को पहल करने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन अनुग्रह में, हमें बचाने का फैसला करते हुए, उसने वही किया। परमेश्वर, जो नाराज़ पक्ष है, पहल करता है और सुलह को पूरा करता है। 2 कुरिन्थियों 5:18, पौलुस कहता है, यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया।

चौंकाने वाली बात यह है कि पहली सदी के यूनानी संदर्भ में, जो सुलह की बात करता है, पुराना नियम नहीं, बल्कि यूनानी नियम करता है, एक वास्तविक यूनानी विशेषज्ञ, स्टेनली पोर्टर का हवाला देते हुए, आश्चर्यजनक रूप से, उद्धरण, पॉल पहले प्रमाणित यूनानी लेखक हैं जिन्होंने नाराज पक्ष, ईश्वर के बारे में बात की, क्रिया की सक्रिय आवाज़ का उपयोग करके सुलह की

पहल की, उद्धरण बंद करें। पोर्टर हमें याद दिलाते हैं, उद्धरण, वास्तव में, सुलह की शुरुआत हमेशा ईश्वर ही करता है। ये मेरे शब्द हैं। अब मुझे माफ़ करें।

कभी-कभी पिता, 2 कुरिन्थियों 5:18-19, कुलुस्सियों 1:20, और कभी-कभी पुत्र, इफिसियों 2:14-16। परमेश्वर स्वयं न केवल मेल-मिलाप का आरंभकर्ता है, बल्कि इसका लक्ष्य भी है। 2 कुरिन्थियों 5, श्लोक 18, 19, 20 में मेल-मिलाप की क्रिया के सभी उपयोगों में, क्रिया का उद्देश्य या लक्ष्य परमेश्वर है। हम परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं।

सच तो यह है कि पवित्रशास्त्र में कभी यह नहीं कहा गया है कि परमेश्वर हमारे साथ मेल-मिलाप कर रहा है। मुझे लगता है कि इसका यही मतलब है। मुझे लगता है कि इसका यही मतलब है।

लेकिन अब तक आप मेरी धार्मिक पद्धति को जान चुके होंगे। इसमें ऐसा नहीं कहा गया है, और मैं इसे खुले तौर पर स्वीकार करता हूँ। इसलिए, मेरा धार्मिक कदम इस पर आधारित है, इसे ध्यान में रखता है, और सबूतों के साथ काम करके निष्कर्ष निकालता है जो बाइबल में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है।

एच. डरमोट मैकडोनाल्ड, जिनके प्रायश्चित के सिद्धांत के इतिहास पर अद्भुत कार्य का मैंने इन व्याख्यानों में बहुत पहले ही उपयोग किया था, ने लिखा, "वह स्वयं हमारी शांति है। इफिसियों 2 में पद 14 में उस भाषा का उपयोग किया गया है। मसीह हमारी व्यक्तिगत शांति या शांति निर्माता है।

इस बात को पूरा करने के लिए मसीह को एक ही व्यक्ति में परमेश्वर और मनुष्य होना चाहिए। कुलुस्सियों 1:19 में उनके ईश्वरत्व के बारे में सिखाया गया है। उनमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता वास करने के लिए प्रसन्न थी।

और उसके द्वारा, परमेश्वर सभी चीज़ों को अपने साथ मिलाने के लिए प्रसन्न था। यीशु की मानवता उसके क़ूस के लहू, उसके मांस के शरीर और उसकी मृत्यु के संदर्भों द्वारा रेखांकित की गई है। हर मेल-मिलाप का मार्ग, चारों, यह बताता है कि मसीह मेल-मिलाप का मध्यस्थ है।

यह पूर्वसर्गों के उपयोग के साथ किया जाता है। सुलह मसीह के माध्यम से, मसीह द्वारा, या मसीह में की गई थी। रोमियों 5:1, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से हमें परमेश्वर के साथ शांति मिलती है।

इफिसियों 2:13, परन्तु अब मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, हे अन्यजातिओ, निकट हो गए हो। 2 कुरिन्थियों 5:18, यह सब कुछ परमेश्वर की ओर से है, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेलमिलाप कर लिया। कुलुस्सियों 1:19 और 20.

क्योंकि परमेश्वर की सारी परिपूर्णता उसी में वास करने को प्रसन्न हुई। और उसी के द्वारा सब वस्तुओं को अपने साथ मिला ले। वह हर दृष्टि से उद्धार का मध्यस्थ है।

तो यहाँ, विशेष रूप से मेल-मिलाप में, प्रभु यीशु मसीह हैं। वास्तव में, मेल-मिलाप का ध्यान मसीह के व्यक्तित्व और कार्य पर है। शुरुआत में हमारे धार्मिक सिद्धांतों में से एक को प्रदर्शित करते हुए, क्राइस्टोलॉजी का परिचय।

उनका व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य हैं। मेल-मिलाप में कार्य, प्रायश्चित पर ध्यान, प्रायश्चित पर है, उनके पुनरुत्थान पर नहीं, यह प्रायश्चित पर है। अपने बेटे की मृत्यु से पूरा हुआ, रोमियों 5:10। क्रूस के माध्यम से, इफिसियों 2:16। क्रूस के लहू से और उसकी मृत्यु के द्वारा उसके शरीर में, कुलुस्सियों 1:20,22। एक जगह, पौलुस ने मेल-मिलाप के आधार के रूप में यीशु के पुनरुत्थान का उल्लेख किया है।

रोमियों 5:10 में उनके मेलमिलाप के कार्य में उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान दोनों शामिल हैं। क्योंकि जब हम शत्रु थे, तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के साथ मेलमिलाप हो गया, तो अब मेलमिलाप हो जाने पर उसके जीवन के द्वारा उद्धार क्यों न पाएंगे। हालाँकि, इस पाठ के आधार पर मसीह की उद्धारक उपलब्धि को उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच विभाजित करना एक गलती है।

बल्कि, श्राइनर सही हैं। रोमियों 5:11, रोमियों 4:25 की याद दिलाता है। उद्धार को प्रभावित करने में मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान अविभाज्य हैं। दायरा।

मसीह का मेल-मिलाप का उद्धारक कार्य इतना महान है कि यह कई स्तरों पर कार्य करता है। व्यक्तिगत, सामूहिक और ब्रह्मांडीय। व्यक्तिगत मेल-मिलाप पापियों को एक-एक करके परमेश्वर के परिवार में लाता है।

सामूहिक मेलमिलाप ईश्वर और लोगों के समूहों के बीच शांति स्थापित करता है, जो चर्चों का गठन करते हैं। ग्राहम कोल की टिप्पणी सारगर्भित है। शत्रुता गले लगाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

ब्रह्मांडीय मेलमिलाप, उद्धारण, सभी चीजों को उसमें एकजुट करने का काम करता है। स्वर्ग की चीजें और पृथ्वी की चीजें, इफिसियों 1:10। यह कैसे हुआ? फिर से, उद्धारण, क्योंकि उसमें परमेश्वर की सारी परिपूर्णता वास करने के लिए प्रसन्न थी। और उसके द्वारा, उन्होंने सभी चीजों को, चाहे पृथ्वी पर हो या स्वर्ग में, उसके क्रूस के लहू के द्वारा शांति स्थापित करके, उसके साथ मेलमिलाप कर लिया, कुलुस्सियों 1:19, 20। यह सार्वभौमिक एकता परमेश्वर के ब्रह्मांड में सामंजस्य या मेलमिलाप लाती है।

इसमें शक्तियों का अधीनीकरण, कुलुस्सियों 2:14, और चर्च का एकीकरण, इफिसियों 2 शामिल है। लेकिन यह ब्रह्मांडीय सामंजस्य सार्वभौमिकता नहीं है, जो शास्त्र की सच्चाई का खंडन करता है। हर कोई बचाया नहीं जाएगा। पहलू।

पौलुस मेल-मिलाप के दो अविभाज्य पहलुओं को अलग करता है। पहला, क्रूस पर मेल-मिलाप की मसीह की अनोखी उपलब्धि, एक खाली कब्र, मेल-मिलाप की नींव है। दूसरा, मेल-मिलाप में ईसाई उपदेश भी शामिल है जो प्रायश्चित को मेल-मिलाप करता है।

परमेश्वर ने हमें मेल-मिलाप की सेवकाई दी है। उसने हमें मेल-मिलाप का संदेश सौंपा है, 2 कुरिन्थियों 5:18-19। हम मेल-मिलाप के इन पहलुओं को क्रमशः वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक कह सकते हैं। वस्तुनिष्ठ रूप से, यीशु का उद्धार कार्य मेल-मिलाप कराता है।

व्यक्तिपरक रूप से, लोगों को बचाए जाने के लिए विश्वास करने की आवश्यकता है। और परमेश्वर ने हमें मसीह के मेलमिलाप के राजदूत बनाया है। फिर से, 2 कुरिन्थियों 5. डगलस मू, मेरे बहुत पसंदीदा टिप्पणीकार, दोनों पहलुओं को अलग करने या न करने में एक स्वस्थ संतुलन प्राप्त करते हैं।

उद्धारण, पॉल में मेलमिलाप के दो पहलू या क्षण हैं। क्रूस पर मसीह के माध्यम से मेलमिलाप की उपलब्धि और विश्वासी द्वारा उस पूर्ण कार्य को स्वीकार करना। स्वाभाविक रूप से, जबकि ध्यान इन क्षणों में से किसी एक या दूसरे पर हो सकता है, परमेश्वर की मेलमिलाप गतिविधि अंततः एक कार्य है।

और वर्तमान आयत, रोमियों 5:10 में, पूरी प्रक्रिया को देखा जा सकता है। क्या परमेश्वर ने भी मेल-मिलाप किया है? पवित्रशास्त्र कभी नहीं कहता कि परमेश्वर ने हमारे साथ मेल-मिलाप किया है। हालाँकि, बहुत से लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि जो लोग इस बारे में गहराई से सोचते हैं, उनमें से अधिकांश का मानना है कि परमेश्वर ने हमारे साथ मेल-मिलाप किया है और यह हमारे साथ मेल-मिलाप करने से भी ज़्यादा बुनियादी है।

मुझे स्पष्ट होना चाहिए। हमें अपने पाप और अलगाव के कारण परमेश्वर से मेल-मिलाप करने की आवश्यकता थी। उसे हमारे साथ मेल-मिलाप करने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वह गलत काम कर रहा था।

वह गलत काम नहीं करता। वह पवित्र है। लेकिन क्या हमारा पाप भी परमेश्वर की ओर से बाधा उत्पन्न करता है? तो, उसे भी हमारे पाप और उसके प्रति शत्रुता के कारण हमारे साथ मेल-मिलाप करने की आवश्यकता थी?। हॉवर्ड मार्शल, प्रसिद्ध न्यू टेस्टामेंट विद्वान, ने लिखा, मानव पाप के प्रति सक्रिय प्रतिक्रिया के रूप में अंतिम निर्णय की वास्तविकता उस स्थिति का एक बिल्कुल केंद्रीय हिस्सा है जिससे पापियों को बचाया जाना चाहिए।

यह वास्तव में बाइबिल का प्रारंभिक बिंदु है। बेशक, हमारा पाप हमारी और भगवान दोनों की ओर से इस संकट का कारण है। लेकिन यह मान लेना गलत है कि हमारे पाप का भगवान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जैसा कि जॉन स्टॉट बताते हैं, उद्धारण, जब भी क्रिया मेल-मिलाप करने के लिए नए नियम में होती है, तो या तो भगवान विषय है, उसने हमें खुद से मेल-मिलाप कराया, या यदि क्रिया निष्क्रिय है, तो हम हैं, हम उसके साथ मेल-मिलाप कर चुके थे।

ईश्वर कभी भी विषय नहीं है। ऐसा कभी नहीं कहा गया कि मसीह ने पिता को हमारे साथ मिला दिया। औपचारिक रूप से, भाषाई रूप से, यह एक तथ्य है।

लेकिन हमें सावधान रहना चाहिए कि हम इस पर बहुत ज़्यादा धार्मिक रूप से ध्यान न दें। यह सोचना ग़लत है कि ईश्वर और हमारे बीच की बाधा, जिसके कारण मेल-मिलाप का काम ज़रूरी हो गया, पूरी तरह से हमारी तरफ़ थी। इसलिए हमें मेल-मिलाप की ज़रूरत थी, और ईश्वर ने ऐसा नहीं किया।

सच है, हम परमेश्वर के शत्रु थे, हमारे दिलों में उसके प्रति शत्रुता थी, लेकिन शत्रुता दोनों तरफ़ थी। परमेश्वर और हमारे बीच की दीवार या अवरोध उसके विरुद्ध हमारे विद्रोह और हमारे विद्रोह के कारण हम पर उसके क्रोध दोनों के कारण बना था। अगर हम एक वैवाहिक लड़ाई की कल्पना कर सकते हैं जिसमें एक पक्ष पूरी तरह से निर्दोष हो, तो हम उसकी कल्पना कर सकते हैं या नहीं भी कर सकते हैं।

मैं कुछ ऐसे लोगों को जानता हूँ जो काफी हद तक इसी तरह के थे। मैं इस तथ्य को स्पष्ट करना चाहूँगा कि शत्रुता होती है, और इसे दोनों पक्षों द्वारा निपटाया जाना चाहिए, यहाँ तक कि मानवीय रिश्तों में भी। डग मू इस बात से सहमत हैं।

पौलुस का मतलब शायद यह है कि हम विद्रोही पापी परमेश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं, उसके नियमों का उल्लंघन करते हैं और उसके स्थान पर दूसरे देवताओं को रखते हैं। लेकिन जैसा कि पौलुस ने इस पत्र में बार-बार पुष्टि की है, रोमियों 1:18, 3:25, परमेश्वर भी शत्रुतापूर्ण है, उद्धरण चिह्नों में, मैं कहूँगा कि हमारे प्रति उचित रूप से शत्रुतापूर्ण है। हमारे पापों ने उचित रूप से उसका क्रोध भड़काया है, जो हमारे ऊपर एक दंड के रूप में खड़ा है।

रोमियों 1:19 और 32. न्याय के दिन चरमोत्कर्ष पर पहुँचा जाना चाहिए, 2:5. संभवतः, जिस शत्रुता का उल्लेख पौलुस यहाँ करता है, रोमियों 5:10, उसमें मनुष्यों के प्रति परमेश्वर की शत्रुता के साथ-साथ मनुष्यों की परमेश्वर के प्रति शत्रुता भी शामिल है।

मसीह के बाहर, लोग परमेश्वर के साथ शत्रुता की स्थिति में हैं। और मेलमिलाप में, यह वह स्थिति या रिश्ता है जो बदल जाता है। हम परमेश्वर के शत्रु से उसके बच्चे बन जाते हैं, रोमियों 8:14-17।

मू का निष्कर्ष रोमियों के व्यापक संदर्भ में और साथ ही रोमियों 5:9 और 10 के तात्कालिक संदर्भ में भी सही है। अगर हमें बचना है तो परमेश्वर और मनुष्य दोनों को आपस में मेल-मिलाप करना होगा। रहस्यमय तरीके से, मसीह के कार्य ने स्वयं परमेश्वर को प्रभावित किया।

ईश्वर ईश्वर से मेल-मिलाप करता है। मैं रहस्यमयी तरीके से इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि यह एक कारण है। हमारे लिए यह अच्छा नहीं है कि हम ईश्वर की बातों को हमसे बेहतर समझने का दिखावा करें।

लियोन मॉरिस हमें याद दिलाते हैं कि हम ईश्वर के हमारे साथ सामंजस्य स्थापित करने को केवल आंशिक रूप से ही समझ पाते हैं। मैं इसे इस तरह से कहता हूँ। हमारे लिए यह अच्छा है कि हमें अपनी जगह पर रखा जाए।



परमेश्वर के राज्य में घमंडी धर्मशास्त्र का कोई स्थान नहीं है। ओह, मेरे शब्द। अगर ये सत्य हमें विनम्र नहीं बनाते हैं, हमें पूजक नहीं बनाते हैं, हमें उन साथी पापियों के बारे में समझने में सक्षम नहीं बनाते हैं जो प्रभु के बिना मूर्खतापूर्ण और भयानक काम करते हैं, तो हम मुसीबत में हैं क्योंकि शायद हम परमेश्वर की कृपा को भूल गए हैं।

लियोन मॉरिस, रोमनों पर अपनी टिप्पणी में लिखते हैं, " इस प्रकार हम ईश्वर के बारे में कह सकते हैं कि वह मेल-मिलाप कर रहा है। यह आवश्यक हो सकता है, वास्तव में यह आवश्यक है, कि जब हम इसे ईश्वर पर लागू करते हैं तो इस शब्द का सावधानीपूर्वक उपयोग करें। लेकिन फिर, क्या यह हमारी सभी भाषाओं के साथ नहीं होता है? जब हम कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य के साथ मेल-मिलाप कर रहा है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि, विभिन्न खामियों के कारण, उसने मनुष्य के प्रति अपना दृष्टिकोण पूरी तरह से बदल दिया है।

बल्कि, यह हमारे दृढ़ विश्वास को व्यक्त करने का एक तरीका है कि, हालांकि वह हर आकार और रूप में पाप के खिलाफ सबसे मजबूत संभव तरीके से प्रतिक्रिया करता है, ताकि मनुष्य उसकी निंदा के अधीन हो, फिर भी जब सुलह हो जाती है, जब मनुष्य और ईश्वर के बीच शांति स्थापित हो जाती है, तो वह निंदा दूर हो जाती है। ईश्वर अब मनुष्यों को अपने पवित्र और धार्मिक क्रोध की वस्तु के रूप में नहीं बल्कि अपने प्रेम और आशीर्वाद की वस्तु के रूप में देखता है। सेंट ऑगस्टीन ने इसे कहा, क्योंकि उन्होंने बहुत सी बातें यादगार ढंग से कही हैं: यहाँ सुसमाचार का चमत्कार है कि जब ईश्वर ने हमारे पापों के लिए हमसे घृणा की, तो उसने अपने पुत्र में हमसे प्रेम किया।

परमेश्वर का हमें अपने साथ मिलाना, फिर, हमारे साथ उसके एक साथ लेकिन तार्किक रूप से पहले से ही मेलमिलाप करने की एक प्रतिवर्ती क्रिया है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम इन छह बाइबिल चित्रों में से एक और का पता लगाएंगे, मसीह के उद्धार कार्य के प्रमुख चित्र, जो कि छुटकारे का है।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्य पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 14, 9 उद्धार कार्य, आवश्यक परिणाम, भाग 3, पिन्तेकुस्त, यीशु की मध्यस्थता, और दूसरा आगमन, मसीह के उद्धार कार्य के छह चित्र, प्रतिस्थापन, विजय, बलिदान, पुनर्स्थापना, छुटकारे, सुलह, भाग 1, सुलह है।